हफ़्तावार रिसाला : 395
Weekly Booklet : 395

Aetikaf ki 10 Madani Baharen (Hindi)

ए'तिकाफ़ की 10 मदनी बहारें

सफ़्हात : 16

जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए	03
70 सालह इस्लामी भाई के तअस्सुरात	04
रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात	09
मिलावट वाले मसाले का कारोबार बन्द कर दिया	13

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**ए 'तिकाफ़ की 10 मदनी बहारें** (क़िस्त : 3)"

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है । इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद–1, गुजरात ।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

ए'तिकाफ़ की 10 मदनी बहारें (क़िस्त : 3)[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 15 सफ़्ह़ात का रिसाला : **"ए'तिकाफ़ की 10 मदनी बहारें** (क़िस्त : 3)" पढ़ या सुन ले उसे रमज़ानुल मुबारक में ख़ूब इ़बादत करने की सआ़दत दे और उस को मां बाप और ख़ान्दान समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ़ और रोज़े जुमुआ़ (या'नी जुमे'रात के ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर जुमुआ़ का सूरज डूबने तक) मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत कर लिया करो, जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان،3/111،حدیث:3033)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ह़जरे अस्वद चूम लिया

एक शख़्स को बुरे माह़ोल और आवारा दोस्तों की सोह़बत ने गुनाहों पर दिलेर कर दिया था, शराब के अड्डों पर जाना उन के लिये मा'मूली बात थी, लोगों से ख़्वाह म ख़्वाह लड़ाई मोल लेना, बिला वज्ह झगड़ना और मारपीट करना उन की आ़दत बन चुकी थी। इन करतूतों की वज्ह से घर का हर फ़र्द उन से बेज़ार था, वोह इसी त़रह़ गुनाहों की वादियों

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" के सफ़्ह़ा 431 ता 443 से लिया गया है।

में भटक रहे थे कि उन की क़िस्मत का सितारा चमका और वोह एक आ़शिक़े रसूल की इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से दा'वते इस्लामी के तह़त नूरानी मस्जिद में होने वाले माहे रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) के आख़िरी अ़शरे के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की बहारें समेटने में शामिल हो गए। दौराने ए'तिकाफ़ आ़शिक़ाने रसूल के दाढ़ियों और इ़मामों वाले नूरानी चेहरों और उन की मह़ब्बतों और शफ़्क़तों ने उन्हें दा'वते इस्लामी से काफ़ी मुतअस्सिर किया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ दस शबाना रोज़ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में रह कर उन्हों ने बहुत कुछ सीखा। 25वीं शब ज़िक्रुल्लाह में मश्ग़ूल थे कि उन पर ग़ुनूदगी त़ारी हुई और اَلْحَمْدُلِلّٰہ उन्हों ने ख़ुद को का'बतुल्लाह शरीफ़ के रूबरू पाया, उन पर करम बालाए करम येह हुवा कि उन्हों ने बे साख़्ता ह़जरे अस्वद को चूम लिया। 27वीं शब भी उन पर करम हुवा और ग़ुनूदगी के आ़लम में मदीनए मुनव्वरह की नूरबार गलियों और सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के दिलबहार नज़्ज़ारों की सआ़दत पाई। इन ईमान अफ़्रोज़ सिल्सिलों ने उन के दिल की दुन्या बदल डाली। उन्हों ने निय्यत की, कि येह दीनी माह़ोल अब ज़िन्दगी भर नहीं छोड़ूंगा। اَلْحَمْدُلِلّٰہ रब्बे अकरम के लुत़्फ़ो करम से उन्हों ने दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी करने के लिये दाख़िला ले लिया।

दिल में बस जाएं आक़ा के जल्वे मुदाम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
देखो मक्के मदीने के तुम सुब्ह़ो शाम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

बुरी सोह़बत में रहने का गुनाह छूट गया

एक शख़्स बुरी संगत के सबब मॉडर्न और बुरे बन्दे बन गए थे। ख़ुश क़िस्मती से अपने अ़लाक़े की अक़्सा मस्जिद के अन्दर होने वाले माहे रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरए मुबारका के इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ में बैठने की बरकत से आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए, पाबन्दे सलातो सुन्नत भी बन गए, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की आ़दत पड़ गई, फ़िल्में ड्रामे देखने की ख़स्लते बद निकल गई और اَلْحَمْدُلِلّٰه एक बहुत बड़ा फ़ाएदा येह हुवा कि मह़ज़ नफ़्स की लज़्ज़त की ख़ातिर बुरी सोह़बत की जो आ़दत थी उस से भी उन की जान छूट गई।

सोह़बते बद में रहने की आ़दत छुटे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
ख़स्लते जुर्मो इस्यां तुम्हारी मिटे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

जज़्बे को मदीने के 12 चांद लग गए

मलाका (इलाहआबाद, यूपी, हिन्द) के एक इस्लामी भाई का वाक़िआ़ कुछ यूं है कि उन्हों ने अह़मदआबाद शरीफ़ में हिन्द सत़ह़ के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाई, दीन की ख़िदमत का काफ़ी जज़्बा मिला। उसी साल आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से आख़िरी अ़शरए माहे रमज़ानुल मुबारक (1416 हि., 1996 ई.) में नागोरी वाड़ की मस्जिद (अह़मदआबाद शरीफ़) के अन्दर होने वाले इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ हुए। आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत उन्हें

ख़ूब मुवाफ़िक़ आई, उन के दीनी जज़्बे को मीठे मदीने के 12 चांद लग गए। ए'तिकाफ़ के बा'द अपने आबाई गांव मलाका (यूपी) में जा कर उन्हों ने दीनी कामों की ख़ूब धूमें मचाईं। दूसरे साल मदनी मर्कज़ की जानिब से मुख़्तलिफ़ शहरों में जा कर सेंकड़ों इस्लामी भाइयों को ए'तिकाफ़ करवाया। ता दमे तह़रीर अह़मदआबाद शरीफ़ में मुक़ीम हैं और दा'वते इस्लामी की तन्ज़ीमी तरकीब के मुत़ाबिक़ तह़सील मालियात के ज़िम्मेदार हैं।

आओ इश्क़े मुह़म्मद के पीने को जाम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
मस्त हो कर करो ख़ूब तुम दीनी काम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

70 सालह इस्लामी भाई के तअस्सुरात

एक सिन रसीदा शख़्स बुढ़ापे के बा वुजूद مَعَاذَ الله नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते थे, फ़िल्में ड्रामे के शौक़ीन थे, दाढ़ी मुंडवाया करते थे और अंग्रेज़ी लिबास पहनते थे। तक़्रीबन 60 बरस की उ़म्र में कौसर मस्जिद के अन्दर पहली बार आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (ग़ालिबन 1416 हि., 1996 ई.) में उन्हें ए'तिकाफ़ की सआ़दत ह़ासिल हुई। वहां दा'वते इस्लामी के आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत मुयस्सर आई। गुजराती रस्मुल ख़त़ में लिखा हुवा क़ुरआने करीम पढ़ता देख कर एक इस्लामी भाई ने उन्हें समझाया कि क़ुरआने करीम अ़रबी में लिखा हुवा पढ़ना ज़रूरी है, गुजराती ज़बान के ह़ुरूफ़ अस्ल अ़रबी मख़ारिज से कैसे अदा करेंगे ! उन की समझ में बात आ गई। बहर ह़ाल ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल से उन्हें

बहुत फ़ैज़ ह़ासिल हुवा। उन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। डेढ़ साल की जिद्दो जुह्द से उन के कुछ न कुछ हुरूफ़ दुरुस्त हुए, اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! अ़रबी में देख कर क़ुरआने करीम पढ़ना नसीब होने लगा। हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में सारी रात गुज़ारने का शरफ़ मिलने लगा, हफ़्ते में एक बार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत में शिर्कत की सआ़दत भी मुयस्सर आने लगी। اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! उन्हों ने एक मुठ्ठी दाढ़ी भी सजा ली, ज़ाहिरी अस्बाब कम होने के बा वुजूद करम बालाए करम हो गया और उन्हें उ़म्रह शरीफ़ और मीठे मदीने की ह़ाज़िरी का शरफ़ मिल गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ ! हर माह तीन दिन क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत ह़ासिल होने लगी, 72 नेक आ'माल में से 40 से ज़ाइद नेक आ'माल पर अ़मल की कोशिश नसीब हुई। एक प्राइवेट फ़र्म में एकाउन्टन्ट हैं और सुब्ह़ो शाम आते जाते बस के अन्दर नेकी की दा'वत देने की चार (4) साल से सआ़दत ह़ासिल है, एक बार ख़्वाब में बस के अन्दर उन्हों ने नेकी की दा'वत पेश की, फ़ारिग़ होने के बा'द देखा कि एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी जिन से येह बहुत मह़ब्बत करते हैं, वोह उन के सामने मुस्कुराते तशरीफ़ फ़रमा हैं। येह रूह़ परवर मन्ज़र देख कर येह रो पड़े और आंख खुल गई, येह ख़्वाब देखने के बा'द नेकी की दा'वत देने में उन्हें मज़ीद इस्तिक़ामत नसीब हुई।

सीख लो आओ क़ुरआन पढ़ना सभी, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
तुम तरक़्क़ी के ज़ीनों पे चढ़ना सभी, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ग़ैरे अ़रबी में आयाते कुरआनी लिखना जाइज़ नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! जब तक अच्छी सोह़बत नहीं मिलती उस वक़्त तक बसा अवक़ात इस्लाह़ की सूरत नहीं बनती। आज कल अक्सर उ़म्र रसीदा अफ़राद भी त़रह़ त़रह़ के गुनाहों में मुब्तला नज़र आते हैं, ह़त्ता कि बेचारे बिस्तरे मर्ग पर पड़े हों तब भी उन्हें नमाज़ पढ़ने, झूट और ग़ीबत से बचने और दाढ़ी मुंडाने वग़ैरा से तौबा कर लेने की तौफ़ीक़ नहीं मिलती, इस ह़ालत में भी مَعَاذَاللّٰه T.V. पर फ़िल्में ड्रामे देखने का सिल्सिला जारी रहता है, सिह़ह़त पा कर सिर्फ़ दुन्या के काम धन्दे ही करने का जज़्बा होता है। येह मुअ़म्मर इस्लामी भाई ख़ुश नसीब थे, जिन्हें ए'तिकाफ़ में दीनी माह़ोल मुयस्सर आ गया और ग़फ़्लतों में गुज़रने वाली ज़िन्दगी यकायक मदनी अदाओं में ढल गई। आप ने देखा कि बेचारे कुरआने करीम भी पढ़े हुए नहीं थे इस लिये गुजराती ज़बान में कुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जिस पर एक आ़शिक़े रसूल ने तफ़्हीम की (या'नी समझाया) तो दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में रात के वक़्त सीख कर अ़रबी में पढ़ने के कुछ न कुछ क़ाबिल हुए। याद रखिये ! अ़रबी ज़बान के इ़लावा दूसरी किसी ज़बान मसलन गुजराती, हिन्दी, इंग्लिश के रस्मुल ख़त़ में कुरआने पाक लिखना जाइज़ नहीं। गुजराती, हिन्दी, अंग्रेज़ी वग़ैरा ज़बानों के माहनामों और दीगर कुतुबो रसाइल में आयात और मासूर (या'नी कुरआनो ह़दीस की) दुआ़एं वग़ैरा अ़रबी रस्मुल ख़त़ ही में लिखनी चाहिएं। ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के एक तफ़्सीली फ़तवे का इक़्तिबास मुलाह़ज़ा हो : "हिन्दी या अंग्रेज़ी रस्मुल ख़त़ में कुरआन लिखना तो सरीह़ तह़रीफ़ है (और कुरआने

पाक की तह्रीफ़ ह़राम है) कि अव्वलन : तो ऊपर ज़िक्र की हुई पाबन्दियों के ख़िलाफ़ है। दुवुम : ثاء، صاد، سین में, इसी त़रह़ ق और ک में, ز۔ذ۔ظ में फ़र्क़ बिल्कुल न हो सकेगा। मसलन ظاہر के मा'ना हैं ज़ाहिर और زاہر के मा'ना हैं चमक्दार या तरो ताज़ा। अब अगर आप ने अंग्रेज़ी में Zahir लिखा तो कैसे मा'लूम हो कि ظاہر है या زاہر। इसी त़रह़ تاہر और طاہر, قادر और قدیر, سامع और سمیع, عالم और علیم में किस त़रह़ फ़र्क़ रहेगा ? ग़रज़े कि औसाफ़े अल्फ़ाज़ तो दर कनार ख़ुद हुरूफ़ ही मुन्क़लिब (या'नी तब्दील) हो जाएंगे और मा'ना ही ख़त्म।" (फ़तावा नईमिया, स. 83)

मैं क़ुरआन सीखूं सिखाऊं ख़ुदाया करम से येह जज़्बा मैं पाऊं ख़ुदाया

घर में भी दीनी माह़ोल बना लिया

रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) में ए'तिकाफ़ के दिन बिल्कुल क़रीब थे, राजोरी (जम्मूं कश्मीर, हिन्द) के एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 40 बरस) से मुलाक़ात होने पर एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी ने उन को सरसरी त़ौर पर इज्तिमाई ए'तिकाफ़ की दा'वत पेश की और वोह आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से मस्जिद रेल्वे स्टेशन (राजोरी, जम्मूं कश्मीर) में होने वाले आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) के इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ हो गए। आ़शिक़ाने रसूल का दीनी माह़ोल देख कर ह़ैरान रह गए, दाढ़ी मुबारक सजा ली, इमामा शरीफ़ सज गया, दर्सो बयान का सिलसिला शुरूअ़ कर दिया, अपने घर में भी दीनी माह़ोल बना लिया, घर की इस्लामी बहनों पर पर्दा नाफ़िज़ किया और ता दमे तह़रीर अपने शह्र "राजोरी" की मुशावरत के निगरान हैं।

ज़िन्दगी का क़रीना मिलेगा तुम्हें, दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ दर्दे मदीना मिलेगा तुम्हें, दीनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मैं रमज़ान के रोज़े भी कम ही रखता था

एक शख़्स बे नमाज़ी और फ़ेशन परस्त नौ जवान थे और फ़िल्में, ड्रामे देखने, गाने बाजे सुनने के इन्तिहाई शौक़ीन। रमज़ानुल मुबारक में रोज़े भी مَعَاذَاللّٰه कम ही रखते, अगर कोई समझाता भी तो टाल देते। एक दिन वोह किसी मुआ़मले के सबब परेशानी के आ़लम में जा रहे थे कि एक बा इमामा इस्लामी भाई से मुलाक़ात हो गई जो आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता थे। वोह उन्हें इन्फ़िरादी कोशिश कर के जामेअ़ मस्जिद में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ले गए, मगर वोह शैत़ानी वस्वसों के बाइ़स कुछ ही देर में उठ कर चल दिये। दो दिन बा'द उन का एक दुन्यादार दोस्त उन को फ़िल्म देखने के लिये ले गया मगर किसी बात पर अनबन होने के बाइ़स वोह उस से अलग हो गए और यूं उन की क़िस्मत का सितारा चमका, हुवा यूं कि माहे रमज़ानुल मुबारक में उन के बड़े भाई साह़िब दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले इज्तिमाई़ ए'तिकाफ़ में मो'तकिफ़ थे, वोह भाईजान से मिलने जा पहुंचे, वहां इमामा शरीफ़ सजाए आ़शिक़ाने रसूल उन्हें बहुत भले लगे। चांदरात एक इस्लामी भाई ने उन के भाईजान को **फ़ैज़ाने सुन्नत** और ना'तों की कैसिट तोह़फ़े में दी, उस इस्लामी भाई ने फ़ैज़ाने सुन्नत का बाब **बे नमाज़ी की सज़ाएं** पढ़ा तो लरज़ उठे और कैसिट में येह मुनाजात

गुनाहों की आ़दत छुड़ा मेरे मौला मुझे नेक इन्सां बना मेरे मौला

सुनी तो दिल चोट खा कर रह गया। اَلْحَمْدُلِلّٰہ उन्हों ने गाने बाजे सुनना छोड़ दिये मगर नमाज़ की पाबन्दी न कर सके। एक आ़शिक़े रसूल की दा'वत पर दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में दोबारा जा पहुंचे और आख़िर तक रुके रहे इख़्तिताम पर **आ़शिक़ाने रसूल** की मुलाक़ात के दिल नशीन अन्दाज़ ने उन्हें दा'वते इस्लामी का शैदाई बना दिया। उन्हों ने चेहरे को मदनी निशानी या'नी दाढ़ी मुबारक से और सर को इ़मामा शरीफ़ से सजा लिया। पांचों वक़्त बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने लगे और सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद भी बन गए, दा'वते इस्लामी के दीनी कामों के लिहाज़ से तन्ज़ीमी त़ौर पर ज़ैली मुशावरत के ज़िम्मेदार बने और पाबन्दी से दर्स देने के साथ साथ दा'वते इस्लामी के मद्रसतुल मदीना में हि़फ़्ज़ करने की सआ़दत भी पाने लगे।

आओ सुन्नत का फ़ैज़ान पाओगे तुम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
اِنْ شَآءَاللہ जन्नत में जाओगे तुम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 644, 645)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

रीढ़ की हड्डी के दर्द से नजात

एक मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी के मामूंज़ाद भाई जो कि मिल ऑनर **(Mill owner)** हैं, **इन्फ़िरादी कोशिश** की बरकत से **माहे रमज़ानुल** मुबारक (1425 हि.) में दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले सुन्नतों भरे

इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ में बैठने के लिये तय्यार हो गए। वोह अ़र्सए दराज़ से रीढ़ की हड्डी के शदीद दर्द में मुब्तला थे, कई डॉक्टरों को दिखाया और उन की तज्वीज़ कर्दा अदवियात भी इस्ति'माल कीं मगर ख़ातिर ख़्वाह फ़ाएदा न हुवा। वोह तश्वीश में थे कि दस दिन ए'तिकाफ़ में कैसे रहूंगा ! ख़ैर वोह दौराने ए'तिकाफ़ दीवार से टेक लगा कर बैठने की कोशिश करते, फ़ोम के गद्दे पर सोने की आ़दत थी, यहां चटाई या दरी बिछा कर ज़मीन पर सुन्नत के मुताबिक़ सोने की तरग़ीब दी जाती थी, उन के लिये इन्तिहाई दुश्वार था। मगर इस के सिवा कोई चारा न था। اَلْحَمْدُلِلّٰه चन्द ही दिन सुन्नत के मुताबिक़ सोने की बरकत से उन्हें मह़सूस हुवा कि कमर के दर्द में काफ़ी कमी है। اَلْحَمْدُلِلّٰه ! दा'वते इस्लामी के इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ की बरकत से आख़िरे कार रीढ़ की हड्डी के दर्द से उन की जान छूट गई।

तुम को तड़पा के रख दे गो दर्दे कमर, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
पाओगे तुम सुकूं होगा ठन्डा जिगर, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

हेप्पी न्यू ईयर का चस्का

जोधपूर (राजस्थान, हिन्द) के एक फ़ोटो ग्राफ़र (उ़म्र तक़रीबन 28 साल) जिन को 31 दिसम्बर को "हेप्पी न्यू ईयर" (Happy New Year) की बे ह़याई से भरपूर पार्टियों में शिर्कत का जुनून की ह़द तक चस्का था और वोह इस के लिये मुम्बई पहुंच जाते थे। **अल्लाह** पाक का करम हो गया कि आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, **दा'वते** इस्लामी की जानिब

से बीच वाली मस्जिद (उदयपूर, राजस्थान, हिन्द) के अन्दर आख़िरी अ़शरए माहे रमज़ानुल मुबारक (1426 हि., 2005 ई.) में होने वाले इज्तिमाई सुन्नत ए'तिकाफ़ में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मो'तकिफ़ होने की उन्हें सआ़दत मिल गई। वहां लगने वाले सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़ों, पुरसोज़ बयानात और रिक्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन को झन्झोड़ कर रख दिया। उन्हों ने अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की, फ़ोटो ग्राफ़ी का काम तर्क कर दिया और पाबन्दी से मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये जगाने लगे।

रंग रलियां मनाने का चस्का मिटे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रक़्स की मह़फ़िलों की नुहूसत छुटे, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

हमें हिजरी सिन का लिह़ाज़ रखना चाहिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ऐ काश ! जनवरी से नए साल के इस्तिक़्बाल के बजाए मुसल्मानों को "इस्लामी नए साल" या'नी हिजरी सिन के मुत़ाबिक़ शुरूअ़ होने वाले नए साल के इस्तिक़्बाल का जज़्बा नसीब हो जाए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! सिने हिजरी का नया साल मुह़र्रम शरीफ़ की पहली तारीख़ से शुरूअ़ होता है, हो सके तो हर साल मुह़र्रम शरीफ़ की पहली तारीख़ आपस में नए मदनी साल की मुबारक बाद देने का ख़ूब एहतिमाम फ़रमाइये।

आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत

एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले "क्लीन शेव" थे, सुन्नतों भरी ज़िन्दगी से दूर ग़फ़्लतों की वादियों

में भटक रहे थे। रमज़ानुल मुबारक का बा बरकत महीना था, एक दिन अपने कमरे में बैठे थे कि उन के वालिद साहिब उन के छोटे भाई से फ़रमाने लगे : "जामेअ़ मस्जिद ख़्वाजगान" में दा'वते इस्लामी के तह़्त रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का इज्तिमाई ए'तिकाफ़ हो रहा है। तुम जल्दी चलो वरना पहली सफ़ में जगह नहीं मिलेगी। येह चौंके और दिल में शौक़ पैदा हुवा कि मैं भी उन आ़शिक़ाने रसूल की ज़ियारत को जाऊं, उस दिन नमाज़े इ़शा मअ़ तरावीह़ उसी मस्जिद में अदा की। बा'दे तरावीह़ कैसिट के ज़रीए ह़ाजी मुश्ताक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आवाज़ में येह ना'त शरीफ़ चलाई गई :

ع : "सानी न कोई मेरे सोहने नबी लजपाल दा"

उन्हें इन्तिहाई सुरूर ह़ासिल हुवा। येह दूसरे दिन फिर जा पहुंचे तो चूंकि जुमे'रात थी लिहाज़ा वहां हफ़्तावार सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ शुरूअ़ हो गया। येह पहली बार शिर्कत कर रहे थे, दिल को अ़जीब सुकून व राह़त मुयस्सर हुई। तीसरे दिन भी गए तो कैसिट इज्तिमाअ़ में मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरा बयान गाने बाजे की होलनाकियां सुनाया गया, बयान सुन कर येह कांप उठे क्यूं कि इस में आ़म बोले जाने वाले गानों के कुफ़्रिय्या अश्आ़र की निशान देही की गई थी। مَعَاذَ الله येह भी कुफ़्रिय्या अश्आ़र बोलने की आफ़त में गिरिफ़्तार थे लिहाज़ा उन्हों ने तौबा की और तजदीदे ईमान भी किया। चूंकि दिल एक दम चोट खा चुका था लिहाज़ा बक़िय्या दिनों के लिये मो'तकिफ़ हो गए। फ़ैज़ाने सुन्नत में ज़ुल्फ़ें (गेसू) रखने की सुन्नतें और आदाब पढ़े तो ज़ुल्फ़ें रखने की निय्यत कर ली और 26 रमज़ानुल मुबारक को होने वाली मह़फ़िले ना'त में दाढ़ी रखने की भी

निय्यत कर ली और सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर सरकारे ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद बन गए। सलातो सलाम के सीग़े भी उन्हों ने वहीं याद किये और ए'तिकाफ़ से वापसी पर गानों की 100 से ज़ाइद कैसिटों और T.V. को (कि उन दिनों "दा'वते इस्लामी का चैनल" नहीं था दीगर चैनल्ज़ में उ़मूमन गुनाहों भरे प्रोग्राम ही देखे जाते थे, इस लिये) घर से निकाल बाहर किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه **दा'वते इस्लामी** के दीनी कामों के लिहा़ज़ से तन्ज़ीमी तौ़र पर डिवीज़नल क़ाफ़िला ज़िम्मादार भी बने।

ढोल बाजों को सुनने से बाज़ आओ तुम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
फ़िल्मी गाने न हरगिज़ कभी गाओ तुम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! फ़िल्मी गाने सुनने सुनाने से बचिये, अपने ईमान की हि़फ़ाज़त कीजिये, कई गाने ऐसे हैं जिन में कुफ़्रिय्या अश्आ़र होते हैं बराहे करम ! मक्तबतुल मदीना के रिसाले "गानों के 35 कुफ़्रिय्या अश्आ़र" का ज़रूर मुता़लआ़ फ़रमाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मिलावट वाले मसाले का कारोबार बन्द कर दिया

एक इस्लामी भाई पहले पहल ऐसे बे नमाज़ी थे, जुमुआ़ की नमाज़ भी नहीं पढ़ते थे। ख़ुश क़िस्मती से उन्हों ने आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तह़त गुलज़ारे मदीना मस्जिद में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह आख़िरी अ़शरए रमज़ानुल मुबारक (1425 हि., 2004

ई.) के इज्तिमाई ए'तिकाफ़ में बैठने की सआ़दत ह़ासिल की। दस दिन में आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत ने उन की क़ल्बी कैफ़िय्यत बदल कर रख दी। اَلْحَمْدُلِلّٰه उन्हों ने कुछ न कुछ नमाज़ सीख ली और पन्ज वक़्ता नमाज़े बा जमाअ़त के पाबन्द बन गए। सिल्सिलए आ़लिया क़ादिरिय्या रज़विय्या में दाख़िल हो कर हु़ज़ूर ग़ौसे आ'ज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुरीद भी बन गए। **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से नेक आ'माल का ऐसा ज़ेह्न मिला कि 72 में से कमो बेश 63 नेक आ'माल पर अ़मल की कोशिश करने में काम्याब हो गए। मक्तबतुल मदीना के रसाइल कसरत से पढ़ने की आ़दत बन गई और ए'तिकाफ़ का एक बड़ा इन्आ़म येह भी मिला कि येह जो मिलावट वाले मिर्च मसाले की सप्लाय का काम करते थे वोह तर्क कर दिया। उन के मसाले के कारख़ाने में तक़रीबन 44 मुलाज़िम काम करते थे, उन्हों ने वोह कारख़ाना ही ख़त्म कर दिया, क्यूं कि दौर बड़ा नाज़ुक है, बड़े पैमाने पर ख़ालिस मसाले के कारोबार में बाज़ार में खड़ा होना निहायत ही दुश्वार है। अगर्चे बा'ज़ सूरतों में मिलावट ज़ाहिर कर के बेचना जाइज़ सही मगर मिलावट का ए'तिराफ़ करें तो ख़रीदे कौन ! उ़मूमन धोकाबाज़ी का दौर दौरा है। आज कल मुसल्मानों की सिह़्ह़त की किस को पड़ी है ! बस दौलत चाहिये ख़्वाह वोह ह़लाल हो या مَعَاذَ الله ह़राम। बहर ह़ाल आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत की बरकत से येह रिज़्क़े ह़लाल के हु़सूल में मश्ग़ूल हो गए। اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल की बरकत से इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन और तहज्जुद के नवाफ़िल के साथ साथ पहली सफ़ में नमाज़े पन्जगाना बा जमाअ़त अदा करने की भी आ़दत बन गई।

छोड़ दो छोड़ दो भाई रिज़्क़े ह़राम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
आओ करने लगोगे बहुत नेक काम, दीनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 645)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हर मुसल्मान का ए'तिकाफ़ क़बूल फ़रमा । या **अल्लाह** ! मो'तकिफ़ीने मुख़्लिसीन के तुफ़ैल हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत कर । **या अल्लाह !** हमें दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमा । **या अल्लाह !** हमें सच्चा आ़शिक़े रसूल बना । **या अल्लाह !** उम्मते मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

हर गुनह से बचा मुझ को मौला, नेक ख़स्लत बना मुझ को मौला
तुझ को रमज़ान का वासित़ा है, या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 135)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

DAWATEISLAMI INDIA
FGN Channel Dekhte Rahiye
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025